इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी में आंबेडकरवाद : एक अनुशीलन

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
के मानव्य विद्या संकाय की हिंदी विद्यावाचस्पती
(पीएच.डी.) उपाधि हेतु पंजीकरण का सारपत्र

शोधनिदेशक
डॉ. सुरेश शेळके,
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
नागनाथ कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, औंढा (ना.) जि. हिंगोली

अनुसंधानकर्ता
दीपाली विश्वनाथराव सूर्यवंशी,
हडको, नवीन नांदेड.

फरवरी - २०१६

इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी में आंबेडकरवाद : एक अनुशीलन

प्राक्कथन :

हमारा समाज जातिव्यवस्था पर आधिरित है। इस लिए समाज में एक ओर शोषणकर्ता, सामंत, स्वामी, संस्कृति के ठेकेदार, खुद को जाति-वर्ण के आधार पर श्रेष्ठ समझनेवालों की एक प्रवृत्ति रही है। दूसरी ओर दबे, कुचले, शोषित, पीडित, पिछडे, जाति के नाम पर जिन्हे हीन समझा गया ऐसी जनसंख्या का बहुत बडा हिस्सा समाज में हमेशा से रहा है। शोषणकर्ता वर्ग अपने अधिकार, वर्चस्व कायम रखने के लिए शास्त्र, जाति, धर्म, संस्कृति और रूढि का आधार लेता रहा। तो शोषित वर्ग अपने आत्मसम्मान के लिए विभिन्न कालखंडों में संघर्ष करता रहा। आज भी यह स्थिति काफी हद तक कायम है। समाज में समानता, मानवता, न्याय, बंधुभाव रहे इस लिए सिध्दार्थ गौतम बुध्द से लेकर महावीर, गुरू नानक, बसवेश्वर, संत नामदेव, संत तुकाराम, संत कबीर, संत रैदास, छत्रपती शिवाजी महाराज, जोतीराव फुले, आगरकर, म.गो. रानडे, राजर्षी शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ऐसे कई ज्ञात अज्ञात महानुभावों ने अपना जीवन सर्मपित किया।

साहित्य और विचारधाराओंका परस्पर संबंध होता है। समसामायिक विचारधारा, या गतकालीन विचारधारा का प्रभाव जैसे समाज जीवन पर होता है, वैसे ही साहित्य एवं संस्कृती पर भी होता है। बिसवी सदी के एक प्रमुख चिंतक के रूप में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने अपनी अमिट छाप छोडी है। आधुनिक भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय संविधान के निर्माता, उपेक्षित, पीडित, शोषित, पिछडों को आत्मसम्मान से जीने का विचार देनेवाला नेता, राजनीतिज्ञ, समाजचिंतक, विधिज्ञ, अर्थशास्त्री, पत्रकार, धर्मचिकित्सक, इतिहास एवं संस्कृती के अध्येता ऐसे कई पहलू के व्यक्तित्व के धनी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर है।

इन दिनों केवल हिंदी साहित्य में ही नही भारतीय साहित्य में चर्चा का विषय रहा वह है दलित साहित्य। जाति-धर्म, संस्कृती, परंपरा, रूढि के नाम पर दलित, शोषित, पीडितों को हजारों वर्षो से पशु से भी बत्तर जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। उनको मानवता के सभी अधिकार नकारे गये। अपमानित, घृणित एवं नरकिय जीवन इन दलितों के हिस्से आया। ऐसे दबे, कुचले, पीडित, वंचित रहे वर्ग की पीडा, वेदना कभी साहित्य का विषय नही बनी और अगर बन भी गयी तो उपरी तौरपर उनका चित्रण किया गया। केवल सहानुभूती के स्तरपर दलितों का जीवन साहित्य का विषय बना। १९८० के बाद हिंदी साहित्य में दलित साहित्य की धारा सशक्त रूप से उभरकर सामने आती

दिखती है। विशेष रूपसे कहानी, कविता और आत्मकथा इन विधाओं में दलित लेखक अपनी पीडा, अपना दुःख प्रभावी और सशक्त रूपसे अभिव्यक्त कर रहे है। भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचार और आंदोलन लगभग सभी भाषा के दलित साहित्य का प्रमुख प्रेरणास्त्रोत है। दलित साहित्य, आंबेडकरवादी साहित्य, बौद्ध साहित्य इस नाम से साहित्य धारा चर्चित है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने दीन दलित, शोषित, पीडित, पिछडे सभी वर्गों को आत्मसम्मान से जीने का विचार दिया। मराठी दलित साहित्य का प्रभाव यह भी एक हिंदी दलित साहित्य की प्रेरणा है।

हिंदी साहित्य इतिहास के आदिकाल (१०५०-१३७५), भक्तिकाल (१३७५-१७००), रीतिकाल (१७००-१९००) और आधुनिक काल (१९०० से अब तक) यह प्रमुख कालखंड माने जाते है। इन कालखंडो में से आदिकाल की अगर हम बात करे तो, आदिकाल में केवल मात्र सिध्द साहित्य ही ऐसा है जीस में अपने युगीन विषमता के प्रति विद्रोह की भावना व्यक्त करता हुआ दलितों, वंचितो को समता, प्रतिष्ठा और न्याय प्रदान करने का दृष्टिकोन रखता है। वज्रयानी परंपरा के सिध्दाचार्यों के अपभ्रंशी दोहो और चर्चा पदो में उपलब्ध साहित्य को सिध्द साहित्य कहा जाता है। चौरासी सिध्दों में से कुछ सिध्द पिछडी कहे जानेवाली जाती के थे। जैसे की कंकारिया, राहुलप्पा, चकुलप्पा, भिकनप्पा, शीलप्पा।

भक्तियुग में भी जनता अन्याय, शोषण और दरिद्रता से पीडित थी। भक्तिकाल का समस्त साहित्य उपेक्षित, वंचित, पिछडे वर्ग के कवियोंव्दारा रचित नही है। इसके रचियता दलितेतर भी रहे है, जिन्हों ने पिछडे वर्ग को समानता और न्याय देने की कोशिश की थी।

रीतिकाल का अधिकांश साहित्य दरबारी रहा है। रीतिकाल के अधिकांश कवी दरबारी होने के कारण उनका ध्यान उपेक्षित, वंचित समाज की ओर नही गया और ना ही उनके सामाजिक प्रश्नोंपर गया।

आधुनिक काल का साहित्य विभिन्न रूपसे बदला हुआ नजर आता है। कई विचारधारा, अलग-अलग प्रवृत्तियाँ, धाराएँ साहित्य में अवतीर्ण होती दिखती है।

विषय चयन की प्रेरणा :

बिसवी शती के मध्य तक भारत पर ब्रिटिशों का शासन रहा। भारत अंग्रेजों का गुलाम था। लेकीन ब्रिटिशों की सत्ता में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार हुआ। गांधीवाद, मार्क्सवाद, मानवतावाद, आंबेडकरवाद इन महत्वपूर्ण विचारधाराओं का प्रभाव समाजपर पडा। इससे विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य भी अछुता नहीं रहा।

स्वतंत्रता के बाद देश ने जनतांत्रिक व्यवस्था का स्वीकार किया। भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता, बंधुता एवं सामाजिक न्याय का मौलिक अधिकार दिया। इस से दीन दलित, शेषित, पीडित, पिछडे वर्गों को आत्मसम्मान से जीने का अधिकार मिला। स्वतंत्रता के बाद भी मानवतावादी दृष्टिकोन रखनेवाले कई विचारक, कई प्रगतिशील आंदोलन उभरे। उन सबका प्रभाव सामाजिक जीवन पर पडना स्वाभाविक था। महाराष्ट्र में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचार से प्रेरित हुआ आंदोलन और साहित्य महत्वपूर्ण है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित ओदोलन की यह धारा मराठी से होते हुई हिंदी में चली गई जिसका प्रभाव कविता, उपन्यास, कहानी और आत्मकथाओं के रूप में दिखाई देता है। मराठी दलित कहानी से हिंदी को परिचित करने के लिए कथाकार कमलेश्वर का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने सर्वप्रथम सारिका जैसी व्यावसायिक कथा पत्रिका के दो दलित साहित्य विशेषांक अप्रैल और मई १९७५ में प्रकाशित किये। शंकरराव खरात, अन्ना भाऊ साठे, प्र. ई. सोनकांबले, अविनाश डोलस, योगीराज वाघमारे आदी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचार एवं आंदोलन से प्रेरित होकर लिखनेवाले कहानीकारों की कहानिया प्रकाशित हुई। इसके उपरांत डॉ. महिपसिंह ने भी संचेतना (डिसंबर, १९८२) का मराठी दलित साहित्य विशेषांक प्रकाशित किया। धीरे धीरे मराठी दलित लेखकों की आत्मकथाए भी अनुवादित होकर हिंदी में आती रही। इन में दया पवार (अछूत), लक्ष्मण माने (पराया), प्र.ई. सोनकांबले (यादों के पंछी), शरणकुमार लिंबाले (अक्करमाशी), माधव कोंडविलकर (अत्यंज), आदी महत्वपूर्ण है। इनसे प्रभावित होकर हिंदी में भी कुछ कथाकारों ने दलित चेतना को केंद्रबिंदू बनाकर कुछ कहानिया लिखी। सबसे पहले डॉ. गिरीराज शरण अग्रवाल ने दलित जीवन की कहानियाँ नामक पुस्तक में संपादित किया। इन पुस्तक में अक्षयकुमार सिन्हा, आलमशहा खान, आशीष सिन्हा, गिरीराज शरण अग्रवाल, जगदिश अग्रवाल, जवाहर सिंह, नरेंद्र मौर्य, रमेशचंद्र आदी अन्य की कहानियाँ संकलित है।

इक्कीसवी सदी में आंबेडकर विचारधारा से प्रेरित होकर अपना लेखन करनेवालों में ओमप्रकाश वाल्मिकी (सलाम, घुसपैठिए),मोहदास नैमिशराय (आवाजे), सुशीला टाकभौरे (सिलिया), जयप्रकाश कर्दम (खरोंच), डॉ. दयानंद बटोही, मुद्राराक्ष, रमणिका गुप्ता, विमल थोरात, सूरजपाल चौहान, डॉ. कुसुम वियोगी आदी कहानीकार महत्वूपर्ण है। इन्ही जैसे कई लेखकों ने डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचार अपने साहित्य की प्रेरणा माना है। इस संदर्भ में जयप्रकाश कर्दम का मंतव्य ध्यान में लेना जरूरी है "दलितों को शक्ती एकमात्र आंबेडकर से मिलती है। वह खुद को अभिव्यक्त करना चाहता है।"१

इस दृष्टि से देखा जाए तो इक्कीसवी सदी की कहानी में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों

१. जयप्रकाश कर्दम, हंस, जुलै, २००६, पृष्ठ-८३

का प्रभाव किस तरह झलकता है यह देखना आवश्यक है। इस लिए मैने "२१ वी सदी की हिंदी कहानी और आंबेडकरवादी विचारधारा" यह विषय पीएच. डी. उपाधि के लिए अनुसंधान हेतू चयन किया है।

विषय का महत्वः

१९२५ के बाद का जो साहित्य है उसपर गांधीवाद का प्रभाव नजर आता है। औद्योगीकरण से कारखाने बने, स्वामी वर्ग और श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। इस लिए मार्क्सवाद का प्रभाव भी रहा। इसी दौरान १९२७ में डॉ. बाबासाहब आंबेडकरने महाड का सत्याग्रह से अपने सार्वजनिक आंदोलन की शुरूवात की। प्रेमचंद ऐसे लेखक है जिनके साहित्य में दलित जीवन की पीडा और दुःख का यथार्थ रूप से चित्रण आया है। ठाकूर का कुआँ, मंदिर, लांछन, कफन, जुरमाना ऐसी अनेक कहानियों में शोषितों के जीवन की पीडा प्रतीत होती है।

जनमत के प्रधान संपादक रामजी राय इनका कथन इस दृष्टि से महत्वूपर्ण है - "आज भी भारतीय समाज में सामंती जीवनमूल्य मौजुद है और साम्राज्यवाद नये सिरे से सिर चढ रहा है। आज राष्ट्रीय चेतना के लिए विचार करना बेहद जरूरी है। आंबेडकर नवराष्ट्र निर्माण के चिंतक थे। एक बनते हुए राष्ट्रराज्य के निर्माण के लिए वे जातिपाती का अंत चाहते थे।"[२]

हिंदी साहित्य पर गांधीवाद, मार्क्सवाद के प्रभाव की चर्चा तो बहुत हुई है, लेकिन हिंदी साहित्य पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों के प्रभाव की चर्चा पर्याप्त मात्रा में अब तक नही हुई, जो होना आवश्यक है। इस लिए मैने '२१ वी सदी की हिंदी कहानी में आंबेडकरवादः एक अनुशीलन' इस विषय का चयन किया है।

अनुसंधान की सीमा और व्याप्ती :

अनुसंधान में अनुशासन हो इस लिए इस विषय की व्याप्ती और मर्यादा भी निश्चित की है। २१ सदी की प्रमुख कहानी में आंबेडकर की विचारधारा स्पष्ट करने हेतू प्रतिनिधिक तौरपर ओमप्रकाश वाल्मिकि, जयप्रकाश कर्दम, सुशिला टाकभौरे, मोहनदास नैमिशराय इन कहानीकारों की कहानियाँ है। यही इस विषय की मर्यादा भी है।

वैश्विक कल्याण की कामना करनेवाला भारत की विभिन्न विचारधाराएँ तथा आंबेडकरवाद को प्रस्तुत कर उसका, २१ वी सदी की कहानी पर प्रतिबिंबीत प्रभाव को विषद किया जाएगा।

अनुसंधान पध्दतिः

प्रस्तुत विषय का शोधकार्य पुरा करने हेतू आवश्यकतानुसार समीक्षात्मक पध्दती, वर्णनात्मक पध्दती,

२. राजमी राय, हंस, जुलै, २००६, पृष्ठ-८३

विश्लेषणात्मक पध्दती इन शोध प्रविधिकांओ प्रयोग किया जाएगा।

उपागम :

प्रस्तुत विषय के उपागम निम्न है -

१. आधुनिक हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधारोओं का प्रभाव रहा है।

२. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर हिंदी साहित्य के सभी विधाओं के प्रेरणास्त्रोत है।

३. २१ वी सदी के कहानी में आंबेडकरी विचारधारा के विभीन्न पहलू सशक्त रूप से झलकते है।

४. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर विचार से प्रेरित कहानी में स्वतंत्रता, समानता, बंधुता और सामाजिक न्याय यह जनतात्रिक मूल्य जीवनमूल्य बनकर झलकते है।

५. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचार से प्रेरित कहानी वंचित, उपेक्षित, शोषितों के अस्मिता को तलाशती है।

अनुसंधान विषय का लक्ष्य

प्रस्तुत अनुसंधान विषय के कुछ लक्ष्य भी है, वह इस प्रकार है-

१. हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव अधोरेखित करना।

२. २१ वी सदी के हिंदी कहानी में प्रतीत होनेवाली आंबेडकर विचारधारा प्रस्तुत करना।

३. आंबेडकरवाद की परिभाषा स्पष्ट करना।

४. डॉ. बाबासाहब आंबेडकर वंचित, पीडित, शोषित वग के साहित्य के प्रेरणास्त्रोत है, यह स्पष्ट करना।

५. २१ वी सदी के प्रमुख कहानी में आंबेडकरी विचारधारा के झलकनेवाले विभिन्न पहलू स्पष्ट करना।

अनुसंधान का प्रारूप :

प्रस्तुत विषय को अनुसंधान हेतु निम्न अध्यायों मे विभाजित किया जाएगा।

प्रथम अध्याय : २१ वी सदी का परिचय

:- इस अध्याय में २१ वी सदी का परिचय दिया जाएगा। पृष्ठभूमि के तौरपर २० वी सदी का भी संक्षिप्त रूप से अवलोकन किया जाएगा।

२१ वी सदी में सूचना और प्रौद्योगिकी सोशल मिडिया, इसका समाज, साहित्य और संस्कृति पर जो परिणाम देखने को मिल रहा है, उसका विवेचन किया जाएगा।

व्दितिय अध्याय : भारतीय साहित्य और विभिन्न विचारधाराएँ

:- प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक काल में हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव किस तरह से रहा है यह प्रस्तुत किया जाएगा।

तृतीय अध्याय : आंबेडकरवाद : परिभाषा, स्वरूप और संकल्पना

:- २० वी सदी में एक प्रमुख चिंतक के तौरपर उभरे डॉ. बाबासाहब आंबेडकरने विभिन्न क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोडी है। उनके विचारों को एक विचारधारा (इझम) के रूप में मान्यता मिली है। आंबेडकर विचारधारा क्या है, उसके क्या मायने है, क्या परिभाषा है और उसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक जनआंदोलनपर कि तरह से प्रभाव रहा है, यह ढुंढने का प्रयास इस अध्याय में किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय : २१ वी सदी की हिंदी कहानी :

:- प्रस्तुत अध्याय में इक्कीसवी सदी की कहानी का स्वरूप एवं संकल्पना स्पष्ट की जाएगी

पंचम अध्याय : २१ वी सदी की कहानी में प्रतिबिंबीत आंबेडकरवाद

:- भारतीय साहित्य पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारो, उनके आंदोलन का प्रभाव रहा है। ओमप्रकाश वाल्मिकि, जयप्रकाश कर्दम, सुशिला टाकभौरे, मोहनदास नैमिशराय इन कहानीकारों की कहानियों मे आंबेडकर के विचार किस तरह से प्रतिबिंबीत होते है, इसका विवेचन करना है।

षष्टम अध्याय : २१ वी सदी की कहानियों में अभिव्यक्त आंदोलन

:- प्रस्तुत अध्याय में २१ वी सदी की कहानियों में विभिन्न प्रकार के सामाजिक आंदोलन किस तरह से प्रतिबिंबीत होते है। यह स्पष्ट किया जाएगा।

उपसंहार :

प्रस्तुत अध्याय में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया जाएगा। अनुसंधान को पूर्ण करने के लिए आधारग्रंथ, संदर्भग्रंथ, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाओं तथा वेब साईट आदी की सहाय्यता ली जाएगी।

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

१.सलाम, घुसपैठिए-ओमप्रकाश वाल्मिकी

२.आवाजे -मोहदास नैमिशराय

३.सिलिया-सुशीला टाकभौरे

४.खरोंच-जयप्रकाश कर्दम

संदर्भ ग्रंथ

१. दलित हस्तक्षेप - रमणिका गुप्ता

२. दलित साहित्य का इतिहास भूगोल - जयप्रकाश कर्दम

३. दलित साहित्याचे क्रांतिविज्ञान - बाबूराव बागुल

४. दलित साहित्य का सौंदर्य साहित्य - जयप्रकाश कर्दम

५. २१ वी सदी का कथा साहित्य -

पत्र-पत्रिकाए

१. हंस

२. युध्दरत आदमी

३. संचारिका

४. अस्मितादर्श

शोधनिदेशक

डॉ. सुरेश शेळके,
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
नागनाथ कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
औंढा (ना.) जि. हिंगोली

अनुसंधानकर्ता

दीपाली विश्वनाथराव सुर्यवंशी,
हडको, नविन नांदेड.